कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ,
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा एवं
महाराजा अग्रसेन टैक्निकल एजुकेशन सोसायटी, दिल्ली;
कथा (यू.के.) लंदन; हेरंब आर्ट एंड कल्चर सेंटर, न्यूयार्क;
वैश्विक हिंदी शाला संस्थान, जर्मनी; हिंदी की गूंज, टोक्यो, जापान

के संयुक्त तत्वावधान में हाइब्रिड मोड में आयोजित

द्वि-साप्ताहिक अंतरविषयी अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला

सत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शन
श्रीमती आनंदीबेन पटेल
मा. कुलाधिपति, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
एवं श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, भारत

भारतीय ज्ञान परंपरा : कल, आज और कल

The Indian Knowledge System : Glorious Legacy, Contemporary Relevance and Future Prospects

संरक्षक
प्रो. आशु रानी
कुलपति, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

21 जुलाई से 03 अगस्त, 2025

स्थान : जुबली हॉल, पालीवाल पार्क परिसर, आगरा

प्रो. उल्फ़त मुहीबोवा
ताशकंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय, ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

श्री तेजेंद्र शर्मा
वरिष्ठ कथाकार, लंदन

श्री यूरी बोत्वींकिन
तारास शेव्चेंको कीव राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, यूक्रेन

डॉ. अतुल चौकशी
वरिष्ठ हृदय रोग विशेषज्ञ, अमेरिका

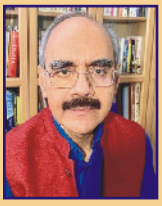

डॉ. विजय राणा
वरिष्ठ पत्रकार, लंदन

डॉ. वेद प्रकाश सिंह
ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी
क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन

राजीव रंजन
विदेशी भाषा विशेषज्ञ
चियांग यूए शीयू विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन

डॉ. इग्नै बंगा
ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड, लंदन

डॉ. इंदिरा गाज़िएवा
रशियन स्टेट विश्वविद्यालय, मॉस्को

श्री अशोक व्यास
न्यू जर्सी, अमेरिका

रमा पूर्णिमा शर्मा
वरिष्ठ साहित्यकार, टोक्यो, जापान

डॉ. विनोद बाला अरुण
अध्यक्ष, रामायण सेंटर, मॉरीशस

डॉ. शैलजा सक्सेना
साहित्यकार एवं सह-संस्थापिका हिन्दी राइटर्स गिल्ड, कनाडा

श्रीमती भानुश्री सिसोदिया
सेराक्यूस यूनिवर्सिटी न्यूयॉर्क

आचार्य अभि योगी
संस्थापक, सनातन गुरूकुल लंदन

श्रीमती अनिता कपूर
साहित्कार, अमेरिका

डॉ. वंदना मुकेश
ब्रिटेन

श्री गोपाल बघेल 'मधु'
वरिष्ठ आध्यात्मिक कवि, कनाडा

डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना
कोलोन, जर्मनी

डॉ. कुसुम नैपसिक
डयूक विश्वविद्यालय, नॉर्थ कैरोलिना, अमेरिका

श्रीमती अंजना सिंह
सामाजिक चिंतक, जर्मनी

श्री रोशन बूदनाह
महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस

डॉ. तनुजा पदास्थ
मॉरीशस

हिमानी मिश्रा गालब्रेथ
न्यूज़ीलैंड

रचना चंदेला
फोरेंसिक वैज्ञानिक, साउथ अमेरिका

कार्यशाला के विशिष्ट उद्देश्य और सम्भावित उपलब्धियाँ

- भारतीय ज्ञान परंपरा के गौरवशाली अतीत को जानना–समझना
- औदात्यपूर्ण अतीत की समृद्ध विरासत का अन्वेषण
- प्रामाणिक सामग्री का एकत्रीकरण और उसका शाब्दिक संयोजन
- भारतीय मेधा का पुनर्जागरण और पुनर्स्थापन
- सत्यम शिवम सुंदरम की साधना और समन्वय

डॉ. आरती 'लोकेश'
दुबई

प्रो. प्रदीप श्रीधर
कार्यशाला संयोजक एवं निदेशक, के.एम.आई.

कार्यशाला के आयोजन की परिकल्पना एवं उद्देश्य

भारतीय संस्कृति समावेशी और समतामूलक समाज की संकल्पना पर आधारित है, जिसने पूरे विश्व को एकता और अखण्डता के सूत्र में बांधा है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार है संस्कार और सम्यक् विचार। संस्कार और सम्यक् विचार मिलकर ही मानवता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मानवता के मार्ग की समझ ज्ञान द्वारा ही विकसित हो सकती है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में ज्ञान के प्रचार–प्रसार से ही चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति संभव है। भारतीय ज्ञान परंपरा मानव शरीर में ही ब्रह्मांड का भाव स्थापित करती है– 'यत् पिंडे तत् ब्रह्माण्डे'। मर्यादित भौतिकता, यथार्थ से परिपूर्ण लोकवादी चिंतन, मानवतावाद और आध्यात्मिकता– ये सब भारतीय ज्ञान परंपरा की सदानीरा धाराएँ हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा ज्ञानानुशासन पर जोर देती है। ज्ञान की उत्पत्ति, ज्ञान का अर्जन, ज्ञान का प्रसार और ज्ञान का उपभोग; इन चारों के समन्वित रूप का नाम ही ज्ञानानुशासन है। भारतीय ज्ञान परंपरा कोई अकेली या एकाकी अवधारणा नहीं है जो किसी एक ही मूलभूत सिद्धांत पर आधारित हो। इसमें भारतीय साहित्य, भारतीय संस्कृति, भारतीय दर्शन के साथ–साथ लौकिक और पारलौकिक– सभी प्रकार की चिंतन पद्धतियाँ समाहित हैं। मुख्य बात यह है कि भारतीय ज्ञान परंपरा इन सब ज्ञानानुशासनों के मूल में आध्यात्मिक श्रेष्ठता के माध्यम से समाज और सामाजिकता का महत्त्व निर्धारित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आदिकाल से अनवरत गतिमान ज्ञान की इस शाश्वत अंतर्धारा की समृद्ध विरासत को जानने–समझने पर व्यापक बल देती है। इस समृद्ध विरासत का पुनः अन्वेषण, प्रामाणिक सामग्री का एकत्रीकरण, उस पर सार्थक मनन–चिंतन की प्रस्तावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति में रखी गई है। ज्ञान को सतत् विकास की प्रक्रिया का माध्यम मानते हुए ज्ञान–विज्ञान की सभी उत्कर्ष और उत्कृष्ट उपलब्धियों को ज्ञान के माध्यम से ही प्रदान किया जाना और ज्ञान के माध्यम से ही प्राप्त किया जाना भारतीय ज्ञान परंपरा के अहर्निश उद्देश्य हैं। इस क्रम में उपलब्ध पावन ज्ञान–परंपरा का पुनर्निवेश, पुनर्पाठ और पुनरीक्षण ही ज्ञान का पुनराधान कर सकता है। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा को नवीन शैक्षिक तकनीकियों और साधनों का प्रयोग करते हुए इसे वर्तमान शिक्षण पद्धतियों से संयोजित किया जाए जिससे समाज भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति जागरूक बन सके। इसे युगानुरूप अद्यतन रूप देकर वर्तमान परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाया जाए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के इस युग में भारतीय ज्ञान परंपरा भौतिक दृष्टिकोण से सोचने के साथ ही आध्यात्मिक रूप से चिंतन–मनन पर भी केंद्रित है। भारतीय ज्ञान परंपरा लोक प्रतिमान के स्वरों को भी प्रतिभासित करती है। ज्ञान सिद्धांत है, ज्ञान शक्ति है और ज्ञान ही उसकी शाश्वत स्वीकृति भी है, परंतु वही ज्ञान उपयोगी हो सकता है जो चैतन्यता के आधार पर अपनी उपस्थिति और उपलब्धि प्राप्त करे। वर्तमान समय की यह स्पष्ट माँग है कि ज्ञान के सनातन मानवीय संकेतों का अवलोकन कर उन्हें पहचाना जाए और प्रौद्योगिकी का साथ लेकर नवीन प्राणधारा का अन्वेषण किया जाए। ज्ञान मानव–संबोधी हो सके, मानवता का सत्कार और संरक्षण करने वाला हो सके; भारतीय ज्ञान परंपरा इस विषय पर पर्याप्त जोर देती है।

तो आइए! 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के सुंदर स्वप्न को साकार करने के लिए बद्धपरिकर होकर और ज्ञान सहचर बनकर भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रशस्त पथ पर आगे बढ़ें।

प्रस्तावित उप–विषय

• भारतीय ज्ञान परंपरा : अवधारणा एवं स्वरूप • वर्तमान संदर्भों में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता • भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक स्वरूप • भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आयाम • भारतीय ज्ञान परंपरा और अध्यात्म • भारतीय ज्ञान परंपरा और मानवीय मूल्य • भारतीय ज्ञान परंपरा और भक्ति साहित्य • आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा • भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्योतिष शास्त्र • वेदों का सामान्य परिचय एवं उनका महत्त्व • प्राचीन भारतीय वैदिक चिंतन • प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन • महाभारत एवं रामायणकालीन राज व्यवस्था • कौटिल्य का अर्थशास्त्र • चाणक्य का राजनीतिक चिंतन • भारतीय ज्ञान परंपरा के परिप्रेक्ष्य में नीति शतकम्, पंचतंत्र, हितोपदेश • भारतीय दर्शन प्रणालियाँ : वैदिक दर्शन, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, चार्वाक दर्शन एवं अन्य दार्शनिक प्रणालियाँ • पुरुषार्थ चतुष्ट्य • भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृत साहित्य • भारतीय भाषाओं का सामान्य परिचय • संस्कृत और भारतीय भाषाओं का अन्तःसम्बन्ध • भारतीय भाषाओं की प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियाँ : सामान्य परिचय • भारत की प्राचीन विधि व्यवस्था • न्याय दर्शन • याज्ञवल्क्य स्मृति में विधि सूत्र • मौर्य, चोल एवं गुप्त साम्राज्यों की विधि व्यवस्था • प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली, शिक्षण विधियाँ • प्राचीन भारत के शिक्षण संस्थान • प्राचीन शिक्षा प्रणाली की व्यक्तित्व निर्माण में भूमिका • भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय– भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, कथक, कुचिपुड़ी, ओडिसी आदि • नृत्य तथा भारतीय चित्रकला पर गीत गोविंद, रामायण तथा महाभारत का प्रभाव • भारतीय शास्त्रीय संगीत : सामान्य परिचय • साहित्य में चित्रकला : महाभारत, रामायण, नाट्यशास्त्र, कथासरित्सागर, विष्णुधर्मोत्तर पुराण आदि • मूर्तिकला और उसका विकास–क्रम • सिंधु घाटी सभ्यता • भारतीय वास्तुशास्त्र • प्राचीन भारत में व्यापार और वाणिज्य का इतिहास • प्राचीन भारत में व्यापार एवं वाणिज्य के व्यापारिक मार्ग • प्राचीन भारत की वाणिज्यिक गतिविधियाँ : कर प्रणाली, आर्थिक नीतियाँ, आर्थिक निर्णयों में राजा एवं प्रशासनिक परिषद् की भूमिका • पाकशास्त्र के प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ • संतुलित आहार की अवधारणा • भोजन पकाने की प्राचीन विधियाँ • लोक प्रशासन एवं प्रबंधन की प्राचीन परंपरा • रामायण, महाभारत में प्रबंधन • आदिकालीन भारत की प्रबंध परिकल्पना का महत्त्व • प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति • प्राचीन भारतीय अन्य चिकित्सा प्रविधियाँ • योग की परिभाषा एवं महत्त्व • स्वास्थ्य

और कल्याण के लिए चिकित्सा के रूप में योग • भारत और दुनिया में आयुर्वेद की वर्तमान स्थिति • कृषिशास्त्र, वृक्षायुर्वेद, गजायुर्वेद, शालिहोत्र संहिता, मृगपक्षिशास्त्र • सामाजिक वानिकी, विभिन्न प्रकार की जड़ी–बूटियाँ, पवित्र पौधे, आयुर्वेदिक औषधियों का सामान्य परिचय • भारतीय ज्ञान परंपरा के महान ऋषियों/वैज्ञानिकों का परिचय : आर्यभट्ट, महावीर आचार्य, बोधायन, भास्कराचार्य, वराहमिहिर, रामानुजन, कणाद, चरक, सुश्रुत, महर्षि पतंजलि, धनवंतरि आदि • शून्य की खोज और उसका महत्त्व • भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान आदि क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ (अंतरिक्ष विज्ञान, ग्रहीय प्रणाली, ध्वनि एवं प्रकाश की गतियाँ, ग्रहण, भारतीय पंचांग आदि) • भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रौद्योगिकी, तकनीकी एवं अभियांत्रिकी का उन्नत स्वरूप • नगर योजना, मंदिर वास्तुकला, स्थापत्य, धातु प्रौद्योगिकी • भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास • भारतीय ज्ञान परंपरा और विश्व बंधुत्व की भावना • भारत में गणित और खगोल विज्ञान का ऐतिहासिक विकासक्रम • भारतीय शिक्षा एवं शैक्षिक संस्थाओं का ऐतिहासिक अवलोकन।

नोट : इन उप–विषयों के अतिरिक्त भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत और महत्त्व को दर्शाने वाले अन्य विषयों पर भी आप अपना आलेख भेज सकते हैं।

भारतीय विद्वज्जन

• प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, लखनऊ • प्रो. संजीव कुमार, कुलपति, महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आज़मगढ़ • श्री भुजंग बोबड़े, निदेशक, हैरिटेज फाउंडेशन, नागपुर • प्रो. पूरन चंद टंडन, सेवानिवृत्त वरिष्ठ आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली • प्रो. हरिमोहन, पूर्व निदेशक, के.एम.आई. • प्रो. जय सिंह नीरद, पूर्व निदेशक, के.एम.आई. • प्रो. विमलेश कांति वर्मा, हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रख्यात विद्वान, भारत • प्रो. अश्वनी श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त आचार्य, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा • श्री कुबेर कुमावत, साहित्यकार, महाराष्ट्र • प्रो. उमापति दीक्षित, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा • (डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा से प्रो. अजय तनेजा, प्रति कुलपति एवं आचार्य, रसायन विज्ञान विभाग; प्रो. सुगम आनंद, आचार्य, इतिहास एवं संस्कृति विभाग; प्रो. विनीता सिंह, सांख्यिकी विभाग, समाज विज्ञान संस्थान; प्रो. हेमा पाठक, अधिष्ठाता, कला संकाय; प्रो. संजय चौधरी, अध्यक्ष, गणित विभाग; प्रो. गिरिजा शंकर शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग; प्रो. मनु प्रताप सिंह, निदेशक, आई.ई.टी.; प्रो. मोहम्मद अरशद, निदेशक, समाज विज्ञान संस्थान; प्रो. बी.एस. शर्मा, अध्यक्ष, पर्यावरण अध्ययन विभाग; प्रो. लवकुश मिश्रा, डीन, फॉरेन स्टूडेंट वेलफेयर अफेयर्स; प्रो. वीरेंद्र कुमार सारस्वत, निदेशक, इन्क्यूबेशन सेंटर; प्रो. आर.के. अग्निहोत्री, डीन, जीवन विज्ञान संकाय एवं अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग; डॉ. राजकुमार, आई.ई.टी.; डॉ. उदिता तिवारी, जैव रसायन विभाग; डॉ. मोनिका अस्थाना, जैव प्रौद्योगिकी विभाग; श्री नागेन्द्र सिंह, आई.ई.टी.; डॉ. शिल्पी लवानियाँ, आई.ई.टी.; डॉ. सुरभि महाजन, सूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग) • प्रो. विजय श्रीवास्तव, प्राचार्य, आर.बी.एस. कॉलेज, आगरा • प्रो. एस.पी. सिंह, प्राचार्य, सेंट जॉंस कॉलेज, आगरा • प्रो. वंदना अग्रवाल, प्राचार्य, श्रीमती बी.डी. जैन कन्या महाविद्यालय, आगरा • प्रो. पूनम सिंह, प्राचार्य, बैकुंठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा • प्रो. आर.के. वर्मा, भौतिक विज्ञान विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा • डॉ. निबीर कांति घोष, यू.जी.सी. एमेरिटस प्रोफेसर, आगरा कॉलेज, आगरा एवं सीनियर फुलब्राइट फैलो, यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन, सिएटल, यू.एस.ए • डॉ. एस.के. गर्ग, महानिदेशक, महाराजा अग्रसेन प्रबंधन संस्थान, दिल्ली • प्रो. अवनीश कुमार, आचार्य, गणित विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी • बी. जगन्नाथ, एडवोकेट, मद्रास हाईकोर्ट • डॉ. अविरल कुमार सिंह, एम.बी.बी.एस., एम.डी., भरतपुर • डॉ. वर्तिका शर्मा, एम.बी.बी.एस., एम.डी., भरतपुर • डॉ. पूनम लता भारती, सहायक प्रोफेसर, ऋषिकुल कैम्पस, उत्तराखण्ड आयुर्वेद विश्वविद्यालय, हरिद्वार • प्रो. आशिमा घोष, प्राचार्य, जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज, प्रयागराज • प्रो. सारिका दुबे, प्राचार्य, कृष्णा देवी गर्ल्स डिग्री कॉलेज, लखनऊ • प्रो. नीलिमा सिंह, अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, राजर्षि टंडन महिला महाविद्यालय, प्रयागराज • प्रो. शिखा श्रीधर, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्रीमती बी.डी.जैन कन्या महाविद्यालय, आगरा • प्रो. रविकांत मिश्रा, गणित विभाग, संत लोंगोवाल इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, लोंगोवाल • प्रो. सुनीता रानी घोष, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा • प्रो. अनुराधा गुप्ता, अर्थशास्त्र विभाग, श्रीमती बी. डी. जैन कन्या महाविद्यालय, आगरा • प्रो. गुंजन, बैकुंठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा • डॉ अमित कुमार जैन, प्राचार्य, श्री स्यादवाद महाविद्यालय, वाराणसी • डॉ. श्री भगवान मेहरा, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक • डॉ.सुमत कुमार जैन, सहायक प्रोफेसर, जैनोलॉजी एण्ड प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान • प्रो. अनुराग पालीवाल, आगरा कॉलेज, आगरा • डॉ. ज्योति शर्मा, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली • डॉ. निखिल चतुर्वेदी, वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, आगरा • डॉ. निशीथ गौड़, दयालबाग डीम्ड विश्वविद्यालय, आगरा • डॉ. मधुरा राठौड़, एस.एम.एम.सी.ए., नागपुर • डॉ. देशबंधु, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली • डॉ. विशाल भारद्वाज, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर • डॉ. अमनप्रीत कौर, सहायक प्रोफेसर, पंजाब स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर • प्रो.अशोक थपलियाल, वास्तुशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली • डॉ.नवदीप जोशी, सहायक प्रोफेसर, योग विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली • डॉ शिखा श्रीवास्तव, सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, भास्कराचार्य कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय • डॉ.मनोज कुमार त्रिपाठी, सुभारती विवेकानन्द विश्वविद्यालय, मेरठ • डॉ. मोहित शर्मा, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ • डॉ. सतपाल, एस.डी. कॉलेज, बरनाला • डॉ. सुनीता सैनी, संस्कृत विभाग, एमडीयू, रोहतक • श्रीमती भावना सक्सैना, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय • डॉ. दीप्ति अग्रवाल, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली • प्रो. गरिमा श्रीवास्तव, जेएनयू, नई दिल्ली • डॉ. राजा पांडे, हिंदुस्तान कॉलेज, आगरा, डॉ. सिम्मी वशिष्ठ, दिल्ली फार्मास्यूटिकल साइंसेज एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी, न्यू दिल्ली

• प्रो. दर्शन पाण्डेय, प्राचार्य, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय • प्रो. बहादुर सिंह परमार, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर • प्रो. अनुसुइया अग्रवाल, प्राचार्य, स्वामी आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी माध्यम आदर्श महाविद्यालय, महासमुंद • प्रो. मनोज कुमार शर्मा, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ • प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव, निदेशक, अंतरराष्ट्रीय प्रभाग, इग्नू, नई दिल्ली • प्रो. अरूण कुमार दीक्षित, प्राचार्य एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं सैन्य अध्ययन केन्द्र, डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर • डॉ. रुचि चतुर्वेदी, वरिष्ठ कवयित्री, भारत • प्रो. आलोक श्रीवास्तव, प्रोफेसर, पादप विज्ञान विभाग, एमजेपी रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली • डॉ. रुचि द्विवेदी, असिस्टेंट प्रोफेसर, क्षेत्रीय अर्थशास्त्र विभाग, एमजेपी रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली • प्रो. रुचिरा ढींगरा, आचार्य, हिंदी विभाग, शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली • डॉ. पेरिसा गुप्ता, सहायक आचार्य, सीडीओई (जन्तु विज्ञान), मंगलायतन विश्वविद्यालय • डॉ. चांदनी सक्सेना, आचार्य, इतिहास विभाग, जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, कानपुर • डॉ. पी. बी. वनिता, कार्यवाहक प्राचार्य, श्री कन्यका परमेश्वरी कला एवं विज्ञान महिला महाविद्यालय, चेन्नई • डॉ. मधु विनय, सहायक प्रोफेसर, श्री कन्यका परमेश्वरी कला एवं विज्ञान महिला महाविद्यालय, चेन्नई • प्रो. वी.के. सिंह, आचार्य, हिंदी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा • प्रो. शैफाली चतुर्वेदी, आचार्य, हिंदी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा • प्रो. वीरेंद्र कुमार व्यास, आचार्य, पत्रकारिता एवं लोक संचार विभाग, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, मध्य प्रदेश • डॉ. प्रकाश दुबे, अध्यक्ष, भौतिक विज्ञान विभाग, जनता पी.जी. कॉलेज, बकेवर, इटावा • श्री जीतेन्द्र नाथ शर्मा, संपादक, सदीनामा पत्रिका समूह एवं सदस्य, एशियाटिक सोसाइटी भारत सरकार • प्रो. बीना शर्मा, पूर्व निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा • डॉ. नीलम भटनागर, सेवानिवृत्त अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बैकुंठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा • डॉ. खुशीराम शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा।

महत्त्वपूर्ण निर्देश

1. प्रतिभागियों द्वारा कार्यशाला में वाचन हेतु शोध पत्र सारांश एवं प्रकाशन हेतु संपूर्ण शोध पत्र आमंत्रित हैं।
2. चयनित शोध पत्रों की एक संपादित पुस्तक ISBN नंबर के साथ प्रकाशित की जाएगी।
3. शोध पत्र यूनिकोड (मंगल एवं एरियल) फॉन्ट में एवं वर्ड फाइल में ही स्वीकार किए जाएंगे।
4. शोध पत्र के संबंध में किसी भी प्रकार की जिज्ञासा के समाधान हेतु डॉ. नितिन सेठी (मो. 9027422306) से संपर्क करें।
5. अपने शोध पत्र kmiseminar2024@gmail.com पर प्रेषित करें।
6. शोध पत्र सारांश वाचन करने वाले प्रतिभागी (ऑनलाइन एवं ऑफलाइन) सुश्री शिवानी चौहान (मो. 7838195100) से संपर्क करें। समय सीमा : 5 मिनट
7. शोध पत्र के अन्त में अपना पूरा नाम, घर/कॉलेज का पता (पिनकोड सहित), मोबाइल नं., ई–मेल अवश्य लिखें। इसके अभाव में यदि शोध पत्र प्रकाशन में कोई असुविधा होती है, तो आयोजकों का उत्तरदायित्व नहीं होगा।
8. शोध–पत्र प्राप्त होने की अन्तिम तिथि 10 अप्रैल 2025 है। अंतिम तिथि तक प्राप्त शोध–पत्रों की संपादित पुस्तक का विमोचन कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में किया जाएगा। अधिकतम शब्द सीमा 3000 शब्द है।
9. पंजीकरण शुल्क : शिक्षकों हेतु 5,000/-, शोधार्थियों / विद्यार्थियों हेतु 3,000/-, भारत से बाहर के प्रतिभागियों हेतु $100
10. कार्यशाला में भौतिक रूप से प्रतिभाग करने वाले शोधार्थियों, शिक्षकों के लिये विश्वविद्यालय के अतिथि–गृह में नि:शुल्क आवास की व्यवस्था होगी। आवास–व्यवस्था के लिये डॉ. मोहिनी दयाल (मो. 79830 11368) से संपर्क करें।

संस्थान की आयोजन समिति

डॉ. नीलम यादव, श्रीमती पल्लवी आर्य, डॉ. केशव कुमार शर्मा, डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. आदित्य प्रकाश, डॉ. अमित कुमार सिंह, डॉ. मोहिनी दयाल, डॉ. संदीप कुमार, डॉ. वर्षा रानी, श्री अनुज गर्ग, श्री विशाल शर्मा, डॉ. शालिनी, डॉ. संदीप सिंह, श्री अंगद, श्री कृष्ण कुमार, डॉ. रमा, कंचन, प्रीति यादव।

राष्ट्रीय आयोजन समिति

प्रो. शिखा श्रीधर, प्रो. युवराज सिंह, प्रो. गुंजन, प्रो. सुधीर कुमार शर्मा, प्रो. सुनीता रानी घोष, प्रो. सूरजमुखी, डॉ. देशबंधु, प्रो. पठान रहीम खान, प्रो. हाशम बेग मिर्जा, डॉ. इंदु के. वी., डॉ. पल्लबी दास गुप्ता, डॉ. हिमानी भाटिया, डॉ. दीप्ति अग्रवाल, डॉ. राजा पांडेय, डॉ. नितिन सेठी, डॉ. मनोज राठौड़, कांची श्रीधर, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. तपस्या चौहान, डॉ. कोमल बंसल, शिवानी चौहान, डॉ. प्रेमलता, डॉ. जैस्मीन पटनायक, डॉ. कमलेश कुमारी, श्री राघवेन्द्र सिंह, डॉ. शालिनी वर्मा, प्रो. मनीषा, प्रो. संजीव श्रीवास्तव, श्रीमती पूजा सक्सैना, प्रो. शम्स आलम, डॉ. विकास दुबे, डॉ. विशाल जैन, डॉ. यशोधरा यादव, डॉ. कुलदीप पाठक, डॉ. चारु अग्रवाल, डॉ. नीरू (डी.लिट्.), दिल्ली विश्वविद्यालय।

यू.जी.सी. रेग्यूलेशंस 2018 के अनुसार दो सप्ताह की कार्यशाला अकादमिक स्तर 10 से 11, 11 से 12 और 12 से 13; तीनों स्तर की प्रोन्नति में मान्य होती है। अकादमिक स्तर 10 से 11 की प्रोन्नति में तो कार्यशाला पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के समतुल्य होती है। सुलभ संदर्भ के लिये रेग्यूलेशंस के संबंधित पृष्ठों की पीडीएफ फाइल संलग्न है।

कार्यशाला संयोजक

प्रो. प्रदीप श्रीधर
आचार्य, हिंदी विभाग एवं
निदेशक, के.एम.आई.
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय,
पालीवाल पार्क, आगरा–282004
संपर्क: 98373 50986

पंजीकरण हेतु संलग्न
QR कोड को स्कैन करें।

SHUBHAM
शुभम् पब्लिकेशन
अ/128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)
संपर्क : 9415731903, 9452971407
E-mail : shubhampublicationsknp@gmail.com